चाइल्ड लेबर ट्रैकिंग सिस्टम का लोकार्पण | सीएम ने कहा- कोशिश करें कि कोई बाल श्रमिक बने ही नहीं

मुख्यमंत्री राहत कोष से बालश्रम से मुक्त कराए गए बच्चों को मिलेंगे 25 हजार रुपए

पॉलिटिकल रिपोर्टर | पटना

बिहार में बालश्रम से मुक्त कराए गए बच्चों-को मुख्यमंत्री राहत कोष से 25 हजार सहायता राशि मिलेगी। बाल श्रम निषेध दिवस पर आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने रविवार को यह घोषणा की। इस अवसर पर उन्होंने चाइल्ड लेबर ट्रैकिंग सिस्टम का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा तैयार ट्रैकिंग सिस्टम से आए इनपुट के बाद उन्हें 25 हजार की राशि दी जाएगी। यह पैसा उनके नाम से जमा करा दी जाएगी। इससे उनके अंदर आत्मविश्वास आएगा और वे बेहतर महसूस कर सकेंगे।

मुख्यमंत्री ने बताया कि इस समय मुक्त कराए गए बच्चों को श्रम संसाधन विभाग की ओर से दी जाने वाली राशि में भी वृद्धि की जाएगी। इस समय उन्हें 1800 रुपए मिलते हैं, इसे बढ़ाकर तीन हजार किया जाएगा। इसके अलावा जिला में भी उनके नाम से पांच हजार की राशि जाती है।

बच्चों ने रखी मांग : इसके पहले मुख्यमंत्री के समक्ष मुक्त कराए गए बाल श्रमिकों ने अपनी चार्टर आफ डिमांड रखी, जिसमें अपने पठन-पाठन और सुरक्षित भविष्य के साथ-साथ अपने अभिभावकों को भी शिक्षित व जागरूक करने की मांग की। सीएम ने उनके चार्टर आफ डिमांड को तत्काल स्वीकार करते हुए उनकी मांगों को पूरा करने के लिए मुख्य सचिव की अध्यक्षता में विशेष कमेटी बनाने की भी घोषणा की। उन्होंने बताया कि यह कमेटी बाल श्रमिकों की तमाम मांगों, उनकी समस्याओं पर गौर करेगी। इसके बाद हम आगे उसी आधार पर उनकी समस्याओं को दूर करने की कार्ययोजना बनाएंगे। हमारी योजना तो यह होनी चाहिए कि कोई बाल श्रमिक बने ही नहीं। इसके लिए गंभीरता से काम करना होगा। सिर्फ उन्हें कार्यस्थल से मुक्त कराने से हमारी जिम्मेदारी पूरी नहीं हो जाती।

योजनाओं की समीक्षा जरूरी : सीएम ने कहा कि हम बच्चों के लिए कल्याणकारी योजनाएं चला रहे हैं। पर, इनकी समीक्षा होनी चाहिए कि क्या हम अपने मूल उद्देश्यों को पा रहे हैं? उन्होंने इस संबंध में नीति आयोग के उपाध्यक्ष अरविन्द पनगढ़िया से भी बात की। स्कूल-आंगनबाड़ी केंद्रों की स्थिति सुधारी। आंगनबाड़ी केंद्रों पर बच्चों के लिए कपड़े की व्यवस्था की। इसके लिए उन्हें 250 रुपए दिए जाते हैं। बच्चों को स्कूल तक लाने के लिए कई योजना बनाई। मिड-डे मील, साइकिल योजना, पोशाक योजना जैसी योजना शुरू की गई। फिर भी उपस्थिति 50% से अधिक नहीं हुई तो 75% उपस्थिति अनिवार्य की। अब कोई हाजिरी बनाकर चला जाए तो? इस पर सोचना होगा, विचार करना होगा।

अधिवेशन भवन में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, मंत्री विजय प्रकाश, मंजू वर्मा व आलोक कुमार मेहता।

सीएम ने बिना बिजली के ही भाषण का किया अंत

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के भाषण के दौरान ही अचानक करीब पौने दो बजे बिजली गुल हो गई। पूरे कक्ष में अंधेरा छा गया। थोड़ी प्रतीक्षा के बाद इलेक्ट्रॉनिक चैनलों के कैमरामैन ने अपनी बत्ती जलाई। इसी रोशनी में सीएम ने अपना भाषण खत्म किया। समाज कल्याण विभाग की प्रधान सचिव वंदना किनी ने भी इसी तरह अपना धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम खत्म होने के बाद बाहर जाने के लिए जब सीएम उठकर खड़े ही हुए थे कि बिजली आ गई। सीएम मुस्कुरा कर रह गए। सात मिनट तक बिजली गायब रही।

40 लाख बालश्रमिक हैं

इसके पहले शिक्षामंत्री अशोक चौधरी ने कहा कि बालश्रम पर अंकुश लगाने से ही जनसंख्या पर नियंत्रण किया जा सकता है। हमारा देश बालश्रम के मामले में चिंताजनक स्थिति में है। 40 लाख बालश्रमिक हैं। लेकिन, बिहार की स्थिति पहले से लगातार बेहतर होती जा रही है। सहकारिता मंत्री आलोक कुमार मेहता ने कहा कि बालश्रम अभिशाप है। बिहार में सीएम के नेतृत्व में इसके उन्मूलन की दिशा में प्रभावी कार्य हुए हैं। समाज कल्याण मंत्री कुमारी मंजू वर्मा ने कहा कि अब वक्त आ गया है जब हमें इस कुरीति से बाहर निकलें। श्रम संसाधन मंत्री विजय प्रकाश ने कहा कि सरकार बाल श्रम उन्मूलन के लिए संकल्पित है और इस दिशा में बेहतर काम हो रहे हैं। समारोह को यूनिसेफ के बिहार प्रतिनिधि यामीन मजूमदार व बालमुक्ति मो. सलीम ने भी संबोधित किया। इसके पहले श्रम संसाधन विभाग के सचिव दीपक कुमार सिंह ने पूरी पहल की विस्तार से जानकारी दी। समाज कल्याण विभाग की प्रधान सचिव वंदना किनी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्लाई फैक्ट्री में काम किया, पीटा गया...गालियां सुनीं...आज एसएसबी में

मैंने बड़ी नारकीय जिंदगी जी है। न कोई सपना, न सहारा। न अपनी जिंदगी, न जिंदगी से कोई उम्मीद। प्लाई फैक्ट्री में काम करता था। 20 रुपए रोजाना मिलते थे। कभी कोई गलती हो गई तो गंदी-गंदी गालियां सुननी पड़ती थी। कभी तो बुरी तरह पीटा भी जाता था। यही नियति हो गई थी। कोई रास्ता नहीं था। यहां नहीं होता तो कहां जाता, क्या करता? भविष्य अंधकारमय नजर आता। धीरे-धीरे इन सबका अभ्यस्त हो गया। अपनी जिंदगी तो कहीं खो सी गई थी। छोटे से कमरे में सपने कैद होकर रह गए थे। कुछ करने की उम्मीद भी छोड़ दी थी। पर, 2004 में किस्मत ने करवट बदली। प्रथम संस्था के प्रयास से मुझे मुक्त कराया गया। इसके बाद मैंने पढ़ाई शुरू की। जमकर मेहनत किया। वर्ष 2012 में इंटर किया। फिर एसएसबी की परीक्षा दी और उसमें चुना गया। आज यूपी के बहराइच में पोस्टेड हूं। बेहतर जिंदगी जी रहा हूं। हिम्मत हार जाता तो आज उसी फैक्ट्री में गाली सुनता रहता और पीटा जाता। - **मनोज कुमार**, सीतामढ़ी

बच्चों ने सीएम से मांगा शिक्षा और सम्मान

लकड़ी बेचने वाले पवन कुमार ने बताया कि पिता के निधन के बाद उसके पास कोई उपाय नहीं था। चूड़ी फैक्ट्री में काम किया और बेरहमी से पीटा गया। मुक्त कराने के बाद नए सिरे से जिंदगी संवारने की कोशिश कर रहा है। पर, भविष्य असुरक्षित है। अंजलि ने बताया कि पटना रेलवे स्टेशन पर छोड़े जाने के बाद उसकी स्थिति अनाथ जैसी थी। हमेशा डर के साए में जीती रही। शिवम कुमार को बचपन में ही सारी गंदी आदतों ने घेर लिया। नशा करने की आदत लग गई। जेल भी गया। उसकी तरह के तमाम ऐसे बच्चों के मन में भी सपना है कि वह भी डॉक्टर- इंजीनियर बने। हमें अवसर दीजिए। खुशबू के पिता शराबी थे, मां घरों का काम करती थी। वह बेहतरीन चित्रकार है, लेकिन कोई प्लेटफार्म नहीं। उसने सीएम से शिक्षा व सम्मान मांगा और कहा कि सरकार 15 अगस्त, 2016 से 14 अगस्त, 2017 को बच्चों के नाम पर मनाए।

बच्चों को किया पुरस्कृत

मुख्यमंत्री ने हैदराबाद व मुंबई से मुक्त कराए गए दस बाल श्रमिकों- मोहन कुमार, अशरफ आलम, हबीब अली, बसंत कुमार, हंसलाल महतो, मोहम्मद दिलशाद, नसीम अख्तर, रियाज अहमद, विशाल कुमार सिंह आदि को नकद एवं एजुकेशन किट दिया गया। इसके पहले सीतामढ़ी से आए संतोष कुमार व मो. शब्बीर ने 'मैया मोरी काहे तूने मुझको मुंबई भेजा' गीत से सबको भावुक बना दिया। मंच पर विधान पार्षद चन्द्रेश्वर प्रसाद चन्द्रवंशी, सीआईडी के एडीजी विनय कुमार, सीएम के सचिव अतीश चन्द्रा, मनीष कुमार वर्मा और अनीता सिन्हा भी मौजूद थे।